भारत के वनस्पति प्रदेश

Q. भारत के विभिन्न वानस्पतिक प्रदेशों का वर्णन करें। इसके संसाधानात्मक महत्त्व को भी स्पष्ट करें।

Q. जलवायु प्रदेश और वानस्पतिक प्रदेश में घनिष्ठ संबंध है। स्पष्ट करें।

or

किसी प्रदेश की वनस्पति उसके जलवायु का सूचक होता है।

~~किसी~~ भौगोलिक प्रदेश में प्राकृतिक वनस्पति का विकास प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, अक्षांशीय विस्तार, समुद्र से दूरी तथा जलवायु के अवयवों पर निर्भर करता है। यद्यपि भारत में मॉनसूनी जलवायु पाई जाती है लेकिन अक्षांशीय विस्तार, ऊँचाई, समुद्रीप्रभाव की दृष्टि से आंतरिक विविधता पाई जाती है। इन्हीं विविधताओं के कारण भारत के प्राकृतिक वनस्पति में विविधता पाई जाती है और यही विविधता इसके संसाधानात्मक महत्त्व को बढ़ा देता है।

वस्तुतः वनस्पति जलवायु का ही सूचक होता है। इसकी प्रकृति, प्रकार, सघनता जलवायु और उसके तत्त्वों पर निर्भर है। जैसा कि नीचे की तालिका से समझा जा सकता है।

भारत में प्रतिव्यक्ति वनक्षेत्र औसत 0.11 हेक्टे.

ब्राजील में सर्वाधिक 8.6 हेक्टे.

विश्व में 1.08 हेक्टे. है।

	वर्षा	तापमान	वनों की प्रकृति	वनस्पति प्रदेश।
(i.)	अत्यधिक (200 cm से अधिक)	उष्ण।	सघन वन	उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन
(ii.)	~~अधिक~~ मध्यम वर्षा (100-200)	उपोष्ण।	छोटे वन व घास	उष्ण कटिबंधीय पतझड़ वन
(iii.)	कम वर्षा (50-100)	उपोष्ण।	तृण भूमि	उष्ण कटिबंधीय शुष्क वन
(iv)	न्यून वर्षा (50 से कम)	अतिउष्ण	कंटीली झाड़ियां	मरुस्थलीय व अर्द्धशुष्क वन

(v.) भारतीय जलवायु प्रदेश और वनस्पति प्रदेश में घनिष्ट संबंध है। अतः एक प्रत्येक जलवायु प्रदेश में विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियाँ विकसित होती हैं। भारत को वनस्पति के प्रदेश की दृष्टि से छः वर्गों में बांटा जा सकता है

(i.) उष्ण सदाबहार वन प्रदेश।
(ii.) उष्णार्द्र मॉनसूनी वनस्पति प्रदेश (पतझड़)
(iii.) उष्ण - शुष्क कंटीली वन प्रदेश (मरुस्थलीय वन)
(iv) उपोष्ण पर्वतीय वन प्रदेश (सोरास
(v) हिमालय पर्वतीय वन प्रदेश
(vi) ज्वारीय वन प्रदेश।

इसके विपरीत त्रिवार्था ने भारत को 7 जलवायु प्रदेश में बांटा है —

(i.) उष्ण वर्षा वन प्रदेश - (Am)
(ii.) सवाना जलवायु प्रदेश (Aw)
(iii) उष्ण अर्द्धशुष्क स्टेपी (BS)
(iv.) अर्द्ध मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश (BSh)
(v.) आर्द्र उपोष्ण (Caw)
(vi.) शुष्क मरुस्थलीय (BWh)
(vii.) पर्वतीय जलवायु (H)

वनस्पति प्रदेश

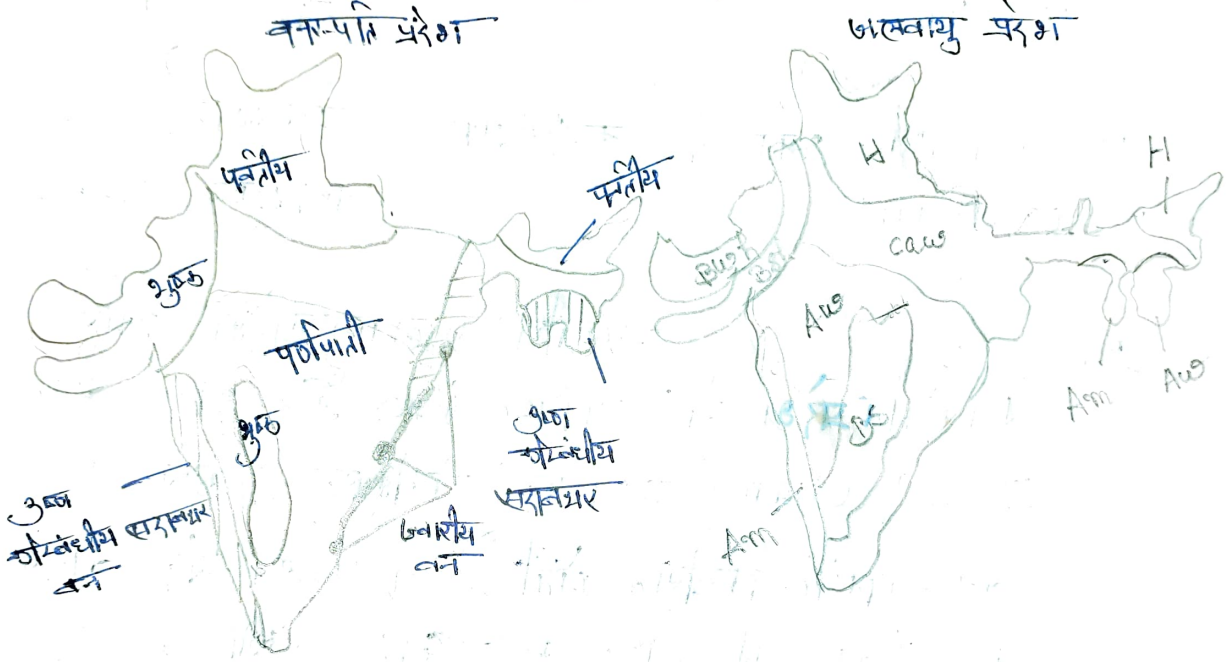

जलवायु प्रदेश

ट्रिवार्था के जलवायु वर्गीकरण में अर्धचन्द्राकार अर्द्धमरुस्थल (BSh) और द. भारत के वृष्टिछाया प्रदेश (BS) को अलग-2 प्रदेशों में रखा गया है। लेकिन प्राकृतिक वनस्पति के विकास के दृष्टिकोण से दोनों की जलवायु संबंधी विशेषता एक है। अतः दोनों प्रदेश मिलाकर उष्णशुष्क कंटीले वन प्रदेश का निर्माण करते हैं। ट्रिवार्था मरुस्थल के मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश

में वनस्पति का लगभग अभाव है और जो वनस्पतियाँ विकसित हुई हैं वे भी शुष्क प्रदेश की कंटीली झाड़ियों के समान ही हैं। उनकी भी जड़ें लंबी होती हैं। अतः पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश को भी शुष्क कंटीली वनस्पति प्रदेश के अंतर्गत रखा गया है।

पर्वतीय जलवायु

पर्वतीय जलवायु और वनस्पति में अभूतपूर्व समरूपता दिखाई पड़ती है। ज्यों-ज्यों ऊँचाई में वृद्धि होती जाती है त्यों-त्यों वनस्पति के प्रारूप में भी परिवर्तन होता है। हिमालय प्रदेश की वनस्पतियाँ यहाँ की जलवायु का अनुसरण करती हैं। जलवायु के प्रभावस्वरूप पर्वस्थली में जहाँ पतझड़ वन पाया जाता है वहीं न्यून तापमान के प्रभाव से अधिक ऊँ. पर नुकीले पत्ते युक्त वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। उष्ण पर्वतीय वनस्पति तथा ज्वारीय वनस्पति का वर्गीकरण जलवायु प्रदेश के वर्गीकरण के मानचित्र से मेल नहीं खाता। लेकिन ये दोनों वनस्पति प्रदेश भी अप्रत्यक्ष रूप से जलवायु प्रदेश से जुड़े हुए हैं। उष्ण पर्वतीय वनस्पति का विकास प्रायद्वीपीय भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में सामान्यतः 1000 m से

अधिक ऊँचाई पर हुआ है। ट्रिवार्था की भी यह मान्यता है कि 1000 m से अधिक ऊँचाई पर जलवायु संशोधित हो जाती है अतः स्वाभाविक है कि प्राकृतिक वनस्पति भी संशोधित हो जाए। इसी का तात्पर्य है कि उष्ण पर्वतीय वनस्पति भी संशोधित जलवायु का ही परिणाम है

जहां तक ज्वारीय वन का प्रश्न है यह तट के किनारे विकसित हुआ है। इन वनस्पतियों पर समुद्र का अभूतपूर्व प्रभाव है। यद्यपि ट्रिवार्था के जलवायु वर्गीकरण में अधिकतर तटीय प्रदेश को उष्ण सवाना (Aw) जलवायु प्रदेश में रखा है लेकिन जब भारतीय उष्ण सवाना प्रदेश (Aw) उपवर्गीकृत किया जाता है तो तटीय प्रदेश में एक विशिष्ट जलवायु की चर्चा की जाती है जिसपर समुद्री वातावरण का अभूतपूर्व प्रभाव देखा जाता है। इसी जलवायु से प्रभावित तटीय प्रदेश में विशिष्ट वनस्पति प्रारूप विकसित हुआ है जिसे ज्वारीय वन कहा जाता है। अतः स्पष्ट है कि दोनों के बीच गहरा संबंध है।

नीचे के शीर्षकों में

[केन्द्रक → विचार → कारक → प्रभाव म

वनस्पतिक प्रदेश के वितरण और उनकी विशेषताओं के साथ उस प्रदेश की जलवायु के संबंधों को स्पष्ट किया गया है

(i.) उष्ण सदाबहार वनस्पति
(वनस्पतिक प्रदेश के वर्णन के क्रम में जलवायु, वितरण उसका महत्व, तथा पारिस्थितिक स्थिति का वर्णन होना चाहिए)

(... स्थान ... का ... सबसे ... अनुकूल ...)

इस प्रकार की वनस्पति का विकास उन क्षेत्रों में हुआ है जहां सामान्यतः विषुवत रेखीय प्रकार की जलवायु पाई जाती है अर्थात अधिक वर्षा और अधिक ताप। अधिक तापवाले क्षेत्र में इस वनस्पति का विकास हुआ है। विद्वानों ने इसे उष्ण वर्षा वन कहा है जहां वार्षिक वर्षा 200 c.m से अधिक होती है। तापमान 25°C के आसपास रहता है। इस प्रदेश का भौगोलिक वितरण प. घाट का पश्चिमी ढाल, उ.पू. भारत, अंडमान निकोबार समूह तथा लक्षद्वीप में पाया जाता है। प. घाट प्रदेश में 450 m. से 1370 m. के मध्य तथा उ. पू. क्षेत्र में 1100 m. की ऊंचाई तक इस प्रकार की वनस्पतियों का विकास हुआ है। इससे अधिक ऊंचाई पर पर्वतीय जलवायु का प्रभाव दिखने लगता है। सदाबहार वनस्पति के वृक्षों की औसत ऊंचाई 30 से 60 m. तक होती है

सूर्य प्रकाश से प्रतिस्पर्धा के कारण इसकी ऊँचाई अधिक होती है। उच्च ताप और अधिक वर्षा के कारण वृक्ष की लकड़ियाँ कठोर हो जाती हैं। कठोरता के कारण ही इसका संसाधनात्मक महत्व सीमित है। इसका उपयोग ईंधन के लिए किया जाता है। यहाँ पाए जाने वाले वृक्षों में एबोनी, रोजवुड आयरनवुड, तलशूर (Talsoor), नारियल चपलस, पून प्रमुख हैं। अंडमान-निकोबार में गर्जन और पादोक जैसे सदाबहारी वृक्ष पाए जाते हैं। तटीय क्षेत्रों में आर्थिक रूप से उपयोगी ताड़ के वृक्ष भी पाए जाते हैं। इसके अलावा रबड़ के वृक्ष भी प्राकृतिक रूप से उपलब्ध हैं। चूंकि ये दोनों आर्थिक महत्व रखते हैं अतः वर्तमान में इन्हें बंजर और परती भूमि में बागानी फसल के रूप में विकसित किया जा रहा है। इनका बागानी विकास इतने बड़े क्षेत्रों में हुआ है कि इनमें भी ये प्राकृतिक वनस्पति ही लगते हैं।

पश्चिमी घाट पर्वतीय क्षेत्र में विनाशात्मक कार्यों के लिए कई वनस्पतियों का विनाश किया जा रहा

है। केरल का साइलेन्ट वैली इन्हीं कारणों से प्राकृतिक असंतुलन का क्षेत्र बन चुका है। विश्व के 25 Hot Spot में प. घाट भी एक है जिसे जैविक विविधता के दृष्टिकोण से संवेदनशील माना गया है। यहाँ कई वनस्पति और जीवों की प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं।

(ii) मॉनसूनी पतझड़ वन

भारत के अधिकांश भौगोलिक क्षेत्र में इसी वन का विस्तार पाया जाता है। इसकी भौगोलिक सीमा बहुत हद तक ऊष्ण सवाना जलवायु प्रदेश से मेल खाती है लेकिन इसी के अंतर्गत भारत के उपोष्ण जलवायु वनस्पति प्रदेश (Cwg या Cwa) को रखा गया। यह कहा जा सकता है कि इस वनस्पति प्रदेश का विकास कन्याकुमारी से शिवालिक के पदस्थली तक हुआ है। प. घाट के पूर्वी ढाल क्षेत्रों में तथा शिवालिक से सटे द. क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से अधिक वर्षा के कारण आर्द्र पतझड़ वन का विकास हुआ है। अन्य क्षेत्रों में शुष्क पतझड़ वन पाए जाते हैं जहाँ वर्षा की मात्रा तुलनात्मक रूप से कम होती है। पतझड़ वन और मॉनसूनी जलवायु में गहरा संबंध है। वर्षा के समय मिट्टी में नमी की कटौती के

कारण वृक्ष हरे-भरे हो जाते हैं लेकिन ग्रीष्मकाल आते-2 वाष्पोत्सर्जन की क्रिया तीव्र हो जाती है और नमी के अभाव में वृक्ष अपनी पत्तियां गिरा देते हैं लेकिन जैसे ही वर्षा प्रारंभ होती है ये पुनः हरे-भरे हो जाते हैं, इस वनस्पति प्रदेश का विकास 100 से 200 C.M वर्षा वाले क्षेत्रों में हुआ है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार, झारखंड प. बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आं.प्र. जैसे राज्यों में पाए जाते हैं। यहाँ वृक्षों की औसत ऊँचाई 20 से 40m तक होती है। यह क्षेत्र उपयोगी वृक्षों से भरा-पड़ा है। साल, सागवान जैसे आर्थिक महत्व के वृक्ष यहीं पाए जाते हैं। अन्य महत्वपूर्ण वृक्षों में शीशम चंदन, पलाश, बांस, हल्दू, पीपल, आम, आंवला प्रमुख हैं। साल और सागवान का विस्तार छत्तीसगढ़, म.प्र. महाराष्ट्र में अधिक है। इसका उपयोग नौका, जलयानी, रेलवे में होता है। बांस का प्रयोग कागज उद्योग में किया जाता है। चंदन एक बहुमूल्य वृक्ष है जिसका प्रयोग रासायनिक उद्योग, श्रृंगार प्रसाधन और धार्मिक कार्यों में किया जाता है।

शहतूत के वृक्ष पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। पलाश के वृक्ष पर लाह के कीड़े पाले जाते हैं। महाराष्ट्र में पतझड़ वनों पर ही मधुमक्खी पालन का कार्य होता है। म.प्र., छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में केन्दू के पत्ते से बीड़ी बनायी जाती है। बिहार, झारखंड जैसे क्षेत्रों में महुआ से एक प्रकार का पेय पदार्थ प्राप्त किया जाता है जो आदिवासियों में लोकप्रिय है। खैर जैसे महत्वपूर्ण वृक्ष भी इन्हीं पतझड़ वनों में पाए जाते हैं। भारत में पतझड़ वनों का सर्वाधिक आर्थिक दोहन हुआ है। म.प्र. महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ में सागवान के वृक्ष को तेजी से काटा गया है। छोटानागपुर क्षेत्र जल लगभग वृक्ष विहीन हो चुका है अतः कहा जा सकता है कि भविष्य में इन क्षेत्रों में भी पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होने की संभावना है। यह क्षेत्र अत्यधिक दोहन का शिकार हो चुका है। आर्थिक महत्व की अधिकता के कारण यहाँ गैरकानूनी कटाई भी तेजी से बढ़ रही है।

(iii.) उष्ण कंटीले वन

50 cm से कम वर्षा वाले क्षेत्र में इसप्रकार के वनों का विस्तार हुआ है। शुष्क कंटीले वन को वर्षा के अनुसार दो वर्गों में बांटा जा सकता है।

(a.) 50 से 100 c.m वर्षा वाले शुष्क वन
(b.) 50 c.m से कम वर्षा वाले शुष्क वन

प्रथम वर्ग वाले वनों का विकास दक्षिण भारत में के वृष्टिछाया प्रदेश (Bs) तथा अर्द्धचन्द्राकार शुष्क प्रदेश (Bsh) में हुआ है। यह अर्द्धचन्द्राकार क्षेत्र पंजाब से कच्छ तक विस्तृत है। दूसरे वर्ग के शुष्क वनों के अंतर्गत पश्चिमी राजस्थान का अधिकांश भाग आता है। प्रथम वर्ग की तुलना में यहाँ के वन कम सघन हैं। फिर भी दोनों वर्गों के वनों की विशेषताएं लगभग समान पाई जाती है। वृक्ष कंटीले होते हैं जिनकी जड़े लम्बी होती हैं। औसत ऊँचाई 6-9 m तक पाई जाती है। उच्चतम, कम वर्षा तथा तीव्र वाष्पोत्सर्जन का प्रभाव यहाँ के वृक्षों पर स्पष्ट दिखता है। 50-100 c.m वर्षा प्रदेश में बबूल, कीकर, खैर, कुल्थी, बेर जैसे वृक्षों की प्रधानता है। 50 सेमी से कम वर्षा वाले प्रदेश में नागफनी की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं। नदी मार्गों के निम्न भूमियों पर कास (KANS) घास पाए जाते हैं। अरावली के उत्तरी तथा पश्चिमी भागों में जहाँ वर्षा 50 से.मी. से कम होता है एनोगाइसिस पेन्डुला प्रकार के वन पाए जाते

है।

वर्षों तक ये वन प्रदेश संसाधनात्मक दृष्टि से उपयोगी नहीं थे लेकिन हाल के वर्षों में नागफनी, बबूल जैसे कंटीले वनस्पतियों का औषधीय उपयोग बढ़ रहा है। आयुर्वेद हेतु यह काफी उपयोगी है। बबूल के वृक्ष पर लाह के कीड़े पाले जाते हैं। इस वृक्ष से गोंद की भी पत्ती प्राप्त होती है। राजस्थान के खजूर से चीनी विकास का कार्य भी होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस वन की उपयोगिता यद्यपि सीमित है परन्तु संभावनाएँ असीम हैं। यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आज जहाँ अर्द्धमरुस्थलीय वन पाए जाते हैं वहाँ बहुत पहले शुष्क सवाना पाया जाता था। अतिचारण के कारण यहाँ मरुस्थलीय वनस्पति का विकास हो गया तथा मृदा की उर्वरा शक्ति पर बुरा असर पड़ा है यह भी देखा जा रहा है कि मरुस्थल का विस्तार पूरब की ओर लगातार बढ़ रहा है।

(iv.) उपोष्ण पर्वतीय वन

प्रायद्वीपीय भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में 1070 m से अधिक ऊँचाई पर उपोष्ण पर्वतीय वनों का विकास हुआ है। यह मूलतः मूल रूप से महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, आन्ध्रप्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाता है, ऊँचाई के अनुसार इसे दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(i.) 1070 से 1525 मी. के मध्य पाए जानेवाले वनस्पति को आर्द्र पर्वतीय वन कहा जाता है। (पहाड़ी)

(iv) 1525 मी. से अधिक ऊँचाई पर पाए जाने वाले वन को आर्द्र शीतोष्ण पहाड़ी वन कहा जाता है। (Temperate Wet Hill forest) इसे तमिलनाडु में शोला (SHOLA) वन कहते हैं। इसप्रकार के वनों का विकास नीलगिरी तथा अन्नामलाई के ~~पहाड़ी~~ पहाड़ियों पर अधिक हुआ है। आर्द्र पहाड़ी वनस्पति की तुलना उष्ण सदाबहार वन से की जा सकती है। वस्तुतः पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढाल पर इस ऊँचाई पर उष्ण सदाबहार वन ही पाए जाते हैं लेकिन 1525 मी. की ऊँचाई के बाद वनों का प्रारूप बदल जाता है। नीलगिरी, अन्नामलाई जैसे पर्वतों पर इस ऊँचाई पर यूकेलिप्टस, पाइन (चीड़) देवदार, चेस्टनट जैसे मुलायम वृक्ष पाए ~~जा~~ जाते हैं। पाइन और युकेलिप्टस वनों का ~~वि~~ उपयोग कागज उद्योग में किया जाता है। यहाँ पाए जाने वाले सवाई घास कागज उद्योग हेतु बेहतरीन कच्चा माल है। इस वन प्रदेश में वृक्षों की औसत ऊँचाई 15 से 40 मी. तक होती है।

(v.) ज्वारीय वन

ज्वारीय वन को मैंग्रोव तथा गरान वन भी कहा जाता है। इस वन का विकास भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में हुआ है। पूर्वी तट पर गंगा, महानदी, गोदावरी, कृष्णा के डेल्टाई मुहानों के साथ-2 अण्डमान निकोबार तथा पश्चिमी तट के कुछ भागों में भी यह वन पाया जाता है।

प. बंगाल, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा, गोवा गुजरात, केरल, कर्नाटक के तटीय प्रदेश में ज्वारीय वनों की स्थिति है। इन वनों को कच्छ प्रदेश में कच्छ वनस्पति के नाम से जाना जाता है। यह वनस्पति 6740 वर्ग कि.मी. मे य॰ विस्तृत है जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 0.14 प्रतिशत है। विश्व के कुल ज्वारीय वनों का 7% भारत में स्थित है।

उष्ण कटिबंध के ज्वारीय स्पर्शीय तटों में जहाँ पंक और गाद पाया जाता है वहाँ सघन मैंग्रोव वनों का विकास होता है। इनकी जड़ें उच्च ज्वार के समय जल में डूबी रहती है और भाटा के समय बाहर दिखती है। ये वनस्पतियाँ नमकीन जल सहने लायक होती है। जल में यह जल्दी नहीं सड़ते हैं सघनता और सुरमुट लताओं के कारण ये अप्रवेश्य होते हैं। यहाँ के वनों में कई प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं जिनमें सुन्दरी, राइजोफोरा, सोनेरीया, केन (बेंत) जैसे वृक्ष प्रमुख हैं। स्थानिक विशेषताओं के आधार पर भारत के मैंग्रोव वनस्पति को तीन (3) वर्गों में बांटा जा सकता है।

(i.) सुन्दर वन
(ii.) ताड़ "
(iii.) नारियल "

इन तीनों ही वनों में वृक्षों की ऊँचाई 20 से 30 मी. होती है। सुन्दर वन सुन्दरी, राइजोफोरा, सोनेरीया, केन प्रमुख वृक्ष पाए जाते है।

ये वन गंगा के डेल्टा, के अलावा महानदी, कृष्णा, गोदावरी डेल्टा में पाए जाते हैं।

ताड़ के वनों का विकास तमिलनाडु के क्षेत्रों में विशेषकर हुआ है। वर्ष में दो बार वर्षा ताड़ के वृक्षों के लिए अनुकूल होता है।

नारियल के वनों का विकास पश्चिमी तटवर्ती क्षेत्रों एवं लक्षद्वीप में हुआ है। ऊँचा तापमान और अधिक वर्षा अत्यधिक अनुकूल उपलब्धता पायी जाती है।

आर्थिक दृष्टि से ताड़ एवं नारियल के वृक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। नारियल के उत्पादन में भारत का स्थान तीसरा है (2007) नारियल से तेल निकालने के अलावा उसकी जटा और पत्तों का भी उपयोग किया जाता है। नारियल की जटा/रेशा से बने पदार्थों की विश्व भर में मांग है। केरल का कोवल्लुर नारियल की जटा से वस्तु बनाने का प्रमुख बड़ा केन्द्र है।

ताड़ से तेल निकालने के अलावा गुड़ निर्माण किया जाता है। वैसे इससे चीनी बनाने की संभावनाएँ लगातार तलाशी जा रही है।

उष्णकटिबंधीय वनस्पति जैविक विविधता से सम्पन्न प्रदेश है। भारत की अधिकांश आर्द्र

कई कच्छ वनस्पतियाँ विलोपन के कगार पर पहुँच गई हैं। जैसे तमिलनाडु के पिचवरम पर पाए जाने वाले रिजोफेरा, अन्नामलाइना,

तथा उड़ीसा का हैरिटेरराकेमिकोसिस, विलुप्त होने के कगार पर हैं। अतः ऐसे वनों के संरक्षण की पर्याप्त आवश्यकता है क्योंकि यह न सिर्फ जैविक विविधता को बढ़ावा देता है वरन समुद्री कटाव को भी कम करता है।

(vi.) हिमालय प्रदेश की वनस्पतियाँ

भौगोलिक दृष्टि से हिमालय प्रदेश के वनस्पति को दो भागों में बांटते हैं।

* पूर्वी हिमालय की वनस्पतियाँ
* पश्चिमी " " "

निम्न अक्षांश के कारण पूर्वी हिमालय में तापीय प्रभाव अधिक पाए जाते हैं। अधिक आर्द्रता के कारण यहाँ हिमरेखा 5100 मी. की ऊँचाई पर मिलने लगती है जबकि पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 6100 मी. पर हिमरेखा मिलती है। ऊँचाई के अनुसार वनस्पति के प्रारूप तथा प्रकार में विभिन्नता देखने को मिलती है।